Volume: 5 Issue: 6 Pages: 85-87

भारतीय राजनीतिक चिन्तन में जयप्रकाश नारायण की भूमिकाः एक अध्ययन

[*1] पूजा नायक

[*1] प्रोफ़ेसर, विभाग राजनीतिक विज्ञान, नेशनल पी.जी.कॉलेज, बड़हलगंज, उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info.
E-ISSN: 2583-6528
Impact Factor (QJIF): 8.4
Peer Reviewed Journal
Available online:
www.alladvancejournal.com

Received: 16/May/2026
Accepted: 20/June/2026

***Corresponding Author**
पूजा नायक
प्रोफ़ेसर, विभाग राजनीतिक विज्ञान, नेशनल पी.जी.कॉलेज, बड़हलगंज, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश:
स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत की राजनीति में जयप्रकाश नारायण एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। बचपन से नैतिकता के प्रति झुकाव गांधीवादी आदर्शों से प्रेरित, युवावस्था में कार्ल माक्र्स के समाजवाद से प्रभावित होकर अपने चिंतन का आधार माक्र्सवादी समाजवाद बनाने को सोचा, लेकिन स्टालिन के समाजवाद के आवरण में किये जा रहे गैर-समानता, अत्याचार, अन्याय ने उन्हें लोकतांत्रिक समाजवाद की ओर मोड़ दिया। जयप्रकाश नारायण के चिंतन का मूल आधार- लोकतांत्रिक- समाजवाद, दलविहीन लोकतंत्र, सर्वोदय, राष्ट्रवाद, समग्र क्रांति, सत्ता का विकेन्द्रीकरण, परोक्ष चुनाव पद्धति, सामाजिक-आर्थिक न्याय था। भारतीय संविधान के मौलिक अधिकार एवं नीति निदेशक तत्वों में राज्य के नागरिकों को सामाजिक एवं आर्थिक न्याय के महत्वपूर्ण उपबंध हैं किन्तु आज भी अमीर-अमीर होता जा रहा है तथा गरीब-गरीबी रेखा से ऊपर उठता ही नहीं। ऐसी स्थिति जयप्रकाश नारायण के चिंतन की प्रासंगिकता भारतीय राजनीति में बनी रहेगी।

मुख्य शब्द: संविधान, लोकतांत्रिक, समाजवाद, दल विहीन लोकतंत्र, सर्वोदय, राष्ट्रवाद, समग्र कांति, सत्ता का विकेन्द्रीकरण, सप्तक्रांति, स्वतंत्रता संग्राम आदि।

प्रस्तावना:

संपूर्ण क्रांति के जनक जयप्रकाश नारायण ने स्वतंत्रता के पश्चात् भारतीय राजनीति की दशा एवं दिशा दोनों को प्रभावित किया। लोकनायक शब्द को चरितार्थ करते हुए उन्होंने मानवतावादी चिंतन को गांधी जी और विनोवा भावे के बाद पुनः स्थापित करने का कार्य किया। उनका जन्म 11 अक्टूबर 1902 में सिताब दियारा, बिहार में हुआ था। उनका राजनीतिक सफर 1929 में कांग्रेस पार्टी में शामिल होने से आरम्भ हुआ किन्तु वे माक्र्सवाद से इतने प्रभावित थे कि बहुत दिनों तक कांग्रेस में नहीं रह सके। स्वतंत्रता के पश्चात् लगभग 1957 में लोकनीति से प्रभावित होकर राजनीति छोड़ने का फैसला किया। किन्तु 1960 के अंतिम दशक में भारतीय राजनीति में संपूर्ण क्रांति के नारे के साथ पुनः जे0पी0 नारायण की वापसी हुई। 05 जून 1975 के विशाल जनसभा में जे0पी0 नारायण ने राष्ट्र कवि दिनकर की यह पंक्ति ‘‘सिंहासन खाली करो कि जनता आती है ’’ की गूँज पूरे देश में आग की तरह फैल गया। उस समय इंदिरा गांधी देश की प्रधानमंत्री थी। 1975 में निचली अदालत में इंदिरा गाँधी पर चुनावों में भ्रष्टाचार का आरोप साबित हो गया और जयप्रकाश नारायण ने इस्तीफे की मांग की। तब इंदिरा गाँधी ने राष्ट्रीय आपात की घोषणा कर दी और जे0पी0 नारायण तथा अन्य विपक्षी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। फिर जनवरी 1977 को लोकनायक जयप्रकाश नारायण के ‘‘संपूर्ण क्रांति आंदोलन’’ के चलते देश में आजादी के पश्चात् पहली बार गैर कांग्रेसी सरकार बनी।

जयप्रकाश नारायण और समग्र क्रांति की अवधारणा

समग्र क्रांति: जयप्रकाश नारायण के अनुसार भारत की समस्या केवल राजनीति नहीं है। यदि केवल सरकार बदल दी जाय या चुनाव करा दिये जाये, तो भी समाज की मूल समस्याएं समाप्त नहीं होगी। समाज में भष्टाचार, असमानता, जाति भेद, आर्थिक शोषण, बेरोजगारी, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, शिक्षा की खराब स्थिति और नैतिक पतन जैसे अनेक संकट मौजूद है। इसलिए उन्होंने कहा कि- परिवर्तन संपूर्ण व्यवस्था में होना चाहिए। राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, संस्कृति और व्यक्ति के नैतिक जीवन को प्रभावित करते हैं। अतः जब इन सभी क्षेत्रों में एक समान परिवर्तन होगा, तभी सच्चा लोकतंत्र और न्यायपूर्ण समाज स्थापित होगा। इसी व्यापक परिवर्तन को उन्होंने ‘‘समग्र क्रांति’’ कहा। दूसरे शब्दों में - समग्र क्रांति का अर्थ है- समाज और राज्य की पूरी व्यवस्था में एक साथ व्यापक और मूलभूत परिवर्तन व्यवस्था में में होना चाहिए.

समग्र क्रांति की ऐतिहासिक पृष्टभूमि

भारतीय राजनीति में 1960 के दशक में कई गंभीर समस्याएं उत्पन्न हो गई थी। सरकार में भ्रष्टाचार बढ़ रहा था। महंगाई और बेरोजगारी अपने चरम पर थी। प्रशासन में जनता की भागीदारी कम थी। लोकतंत्र केवल चुनाव तक सीमित हो गया था। इन्हीं परिस्थितियों में 1974 में बिहार के छात्र आन्दोलन ने सरकार के खिलाफ संघर्ष शुरू किया। छात्रों ने जयप्रकाश नारायण से नेतृत्व देने का अनुरोध किया। 05 जून 1974 को पटना के गाँधी मैदान में जयप्रकाश नारायण ने ऐतिहासिक भाषण दिया और कहा-''यह क्रांति है मित्रों और यह संपूर्ण क्रांति है''। यही से समग्र क्रांति का विचार व्यापक रुप से प्रसिद्ध हुआ।

सत्ता का विकेन्द्रीकरण

जयप्रकाश नारायण का मानना था की भारत में वास्तविक लोकतंत्र तभी संभव है जब सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो। उनके अनुसार सत्ता केवल केन्द्र या राज्य सरकारों में केन्द्रीत नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे गांव और स्थानीय स्तर तक बांट देना चाहिए। वे गांधी जी के ग्राम स्वराज के विचार से प्रभावित थे कि ग्राम पंचायते लोकतंत्र की वास्तविक आधार ईकाई बने। उनका तर्क था कि जब निर्णय लेने की शक्ति स्थानीय समुदायों के पास होगी तो जनता सीधे शासन में भाग लेगी, भ्रष्टाचार कम होगा और लोकतंत्र और अधिक उत्तरदायी बनेगा। इसलिए उन्होंने पंचायती राज संस्थाओं को मजबूत करने, स्थानीय स्वशासन को बढ़ाने और प्रशासनिक-राजनीतिक शक्ति को नीचे तक बांटने की वकालत की।

समग्र क्रांति आन्दोलन के समय जे0पी0 नारायण के प्रमुख नारे

सम्पूर्ण क्रांति अब नारा है, भावी इतिहास हमारा है। सिंहासन खाली करो की जनता आती है। जात-पात तोड़ दो, तिलक-दहेज छोड़ दो आदि जैसे नारे जो राजनीतिक ही नहीं अपितु सामाजिक संरचन में भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा।

सप्तक्रांति

जयप्रकाश नारायण द्वारा प्रतिपादित ''सप्तक्रांति'' का अर्थ-सात तरह की क्रांतियों का एक समूह, जिसके माध्यम से वे भारतीय समाज में एक संपूर्ण क्रांति लाना चाहते थे। यह केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज के पुनर्निर्माण की एक समग्र प्रक्रिया थी।

सप्तक्रांति या संपूर्ण क्रांति के 7 प्रमुख आयाम

1. **सामाजिक क्रांति:** जाति आधारित भेदभाव, अस्पृश्यता और लैगिक असमानता को खत्म करना। एक समतावादी, जातिहीन और वर्गहीन समाज की स्थापना करना।
2. **आर्थिक क्रांति:** आर्थिक विकेन्द्रीकरण को बढ़ावा देना
3. **राजनीतिक क्रांति:** सत्ता का विकेन्द्रीकरण, अर्थात सत्ता स्थानीय निकायों (ग्राम, प्रखण्ड) तक हो। पार्टी/दलविहीन लोकतंत्र के समर्थक थें।
4. **सांस्कृतिक क्रांति:** भारतीय संस्कृति के मूल मूल्यों, नैतिकता और भाईचारे को पुनस्र्थापित करना। रूढिवादी परंपराओं के स्थान पर तर्क और मानवीय तत्वों को अपनाने पर बल देना।
5. **बौद्धिक क्रांति:** लोगों में तार्किक और वैज्ञानिक सोच विकसित करना। रुढ़िवादी परम्पराओं के स्थान पर तार्किक और मानवीय मूल्य को अपनाना।
   विचारों की स्वतंत्रता को बढ़ावा देना।
6. **शैक्षणिक क्रांति:** शिक्षा को रोजगार परक बनाना और जीवन मूल्यों से जोड़ना।
7. **आध्यात्मिक क्रांति:** व्यक्ति के अन्दर नैतिक और आध्यात्मिक चेतना जगाना है। यह व्यक्ति के आत्मसंयम, ईमानदारी, निःस्वार्थ सेवा से सम्बन्धित है। जिसे इन्होंने गांधी जी से प्रेरित होकर सर्वोदय का नाम दिया।

समाजिक और आर्थिक न्याय

समाजिक न्याय: जयप्रकाश नारायण के अनुसार सामाजिक न्याय का अर्थ ऐसा समाज स्थापित करना है जिससे किसी व्यक्ति के जाति, धर्म, वर्ग, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव न हो। उनका मानना था कि भारतीय समाज में सबसे बड़ी समस्या- जाति व्यवस्था, ऊँच-नीच और अस्पृश्यता है। जो मनुष्य की गरिमा को नष्ट करती है। इसलिए वे ऐसे समाज की स्थापना चाहते है, जिसमें सभी मनुष्य समान माने जाए और सभी को समान सम्मान और अवसर प्राप्त हो। जयप्रकाश नारायण ने विशेष रूप से दलितों, पिछड़ों और गरीबों के उत्थान पर बल दिया। उनका विचार था कि लोकतंत्र केवल राजनीतिक व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक व्यवस्था भी है। जब तक समाज में बराबरी और भाईचारा स्थापित नहीं होगा, तब तक लोकतंत्र भी वास्तविक रूप से सफल नहीं हो सकता। इसलिए उन्होंने समाज में नैतिक परिवर्तन, सामाजिक चेतना और मानव-समता की भावना को बढ़ाने पर जोर दिया। वे मानते थे कि सामाजिक न्याय केवल कानून बनाकर नहीं लाया जा सकता, बल्कि इसके लिए समाज की मानसिकता और परंपराओं में भी परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण ने सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए जाति-व्यवस्था और अस्पृश्यता का विरोध किया। सभी मनुष्यों की समानता और सम्मान पर बल दिया। दलितों और पिछड़े वर्ग के उत्थान पर जोर दिया। समाज में भाईचारा और समान अवसर की स्थापना के प्रबल पक्षधर थे।

आर्थिक न्याय: जयप्रकाश नारायण आर्थिक न्याय को एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था के रूप में देखते थे जिसमे समाज के संसाधनों और सम्पत्ति का न्यायपूर्ण वितरण हो और कोई व्यक्ति अत्यधिक गरीब या अत्यधिक सम्पत्ति के कारण शोषण का शिकार न बने। उनका मानना था कि पूंजीवादी व्यवस्था में धन कुछ लोगो के हाथो में केन्द्रीत हो जाता है, जिससे सामाजिक असमानता और शोषण बढ़ता है। इसलिए उन्होंने समाजवादी व्यवस्था का समर्थन किया, लेकिन उनका समाजवाद लोकतांत्रिक और मानवीय था। वे चाहते थे कि उत्पादन के साधनों पर समाज का व्यापक नियंत्रण हो और आर्थिक व्यवस्था का उद्देश्य केवल लाभ कमाना नहीं बल्कि सभी लोगों का कल्याण हो उन्होंने भूमि सुधार, सम्पत्ति के न्यायपूर्ण वितरण और श्रमिकों के अधिकारों पर विशेष बल दिया। जयप्रकाश नारायण का यह विचार था कि हर व्यक्ति को काम का अवसर, उचित मजदूरी और जीवन की आवश्यक सुविधाएं मिलनी चाहिए। इसी के माध्यम से समाज में वास्तविक आर्थिक समानता और न्याय स्थापित हो सकता है। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण का आर्थिक न्याय स्थापित करने के लिए धन और संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण, पूंजीवादी शोषण का विरोध, लोकतांत्रिक समाजवाद का समर्थन और भूमि सुधार और उत्पादन के साधनों पर सामाजिक नियंत्रण पर बल दिया।

सर्वोदय: सबका उदय या सबका कल्याण ही सर्वोदय है।

सर्वोदय का यह विचार मूलतः महात्मा गांधी से प्रेरित था, जिसे बाद में विनोवा भावे और जयप्रकाश नारायण ने आगे विकसित किया। जयप्रकाश नारायण ने अपने जीवन के अंतिम चरण में सक्रिय दलगत राजनीति छोड़कर सर्वोदय आन्दोलन को अपनाया और इसे भारतीय समाज के पुनर्निर्माण का मार्ग माना।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार सर्वोदय का उद्देश्य ऐसा समाज बनाना है जिसमें सभी व्यक्तियों का समान रूप से विकास और कल्याण हो, न की केवल किसी एक वर्ग का। उन्होंने माना कि आधुनिक राजव्यवस्था और दलगत राजनीति अक्सर सत्ता-संघर्ष और स्वार्थ पर आधारित हो जाती है, जिससे समाज में असमानता और शोषण बढ़ता है। इसलिए उन्होंने सर्वोदय के माध्यम से अहिंसा,

सहयोग, समानता और नैतिकता पर आधारित समाज की ढ़ाचे पर बल दिया।

कार्यक्रम - भूदान, ग्रामदान, ग्रामस्वराज और विकेन्द्रीकरण

1. **भूदान:** भूमिदान इसमें बड़े जमींदार याद भूमि स्वामी स्वेच्छा से अपनी कुछ भूमि गरीबों और भूमिहीन किसानों को दे देते थे। इसका उद्देश्य भूमि का न्याय पूर्ण वितरण था। यह आन्दोलन मुख्य रूप से विनोवा भावे द्वारा शुरू किया गया था। जिसका समर्थन जयप्रकाश नारायण ने भी किया।
2. **ग्रामदान:** ग्रामदान का अर्थ है- ‘‘पूरा गांव सामूहिक रूप से अपनी भूमि और संसाधनों को समुदाय के अधीन कर दें।
3. **ग्राम स्वराज:** ग्रामस्वराज का अर्थ है- गांव का स्वशासन इसमें प्रत्येक गांव को एक स्वतंत्र इकाई माना जाता है।

जयप्रकाश नारायण को परोक्ष चुनाव पद्धति

परोक्ष चुनाव पद्धति जो सीधे दिखाई न दे, बल्कि किसी माध्यम से हो। जयप्रकाश के अनुसार परोक्ष चुनाव पद्धति का अर्थ है हर स्तर पर जनता सीधे वोट ना दे, बल्कि पहले छोटे स्तर पर प्रतिनिधि चुने जाये और वही प्रतिनिधि आगे के बड़े स्तर के नेताओं का चुनाव करें। उनका मानना था कि पैसा, दलगत राजनीति, जाति और प्रचार का बहुत असर पड़ जाता है। इसलिए उन्होंने ऐसी व्यवस्था की कल्पना की जिसमें लोकतंत्र गांव से शुरू होकर ऊपर तक पहुँच सके। इस तरह जनता हर स्तर पर सीधे वोट नहीं देती, बल्कि पहले स्तर के प्रतिनिधि आगे स्तर के नेताओं को चुनते हैं। इसलिए इसे परोक्ष चुनाव पद्धति कहा जाता है। इसका उद्देश्य दलगत राजनीति, धनबल और जातीय प्रभाव को कम करना तथा ग्राम स्वराज स्थापित करना। अंततः हम कह सकते है कि जे0पी0 नारायण ने भारतीय राजनीति कि विविध आयामों पर अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डाला। उन्होंने अपने समाजवादी चिंतन से संपूर्ण क्रांति का सूत्रपात किया तथा आपातकाल का विरोध, नागरिक स्वतंत्रता, जनता पार्टी का गठन और गैर कांग्रेसी सत्ता द्वारा सरकार बनाकर भारतीय लोकतंत्र को मजबूत किया तथा एकल पार्टी के वर्चस्व को समाप्त किया। जे0पी0 नारायण विकेन्द्रीकरण, सर्वोदय की अवधारणा और दलीय राजनीति से दूर रहकर समाज सुधार कार्यों में लगे रहे।

निष्कर्ष:

हम कह सकते है कि जे0पी0 नारायण ने भारतीय राजनीति कि विविध आयामों पर अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डाला। उन्होंने अपने समाजवादी चिंतन से संपूर्ण क्रांति का सूत्रपात किया तथा आपातकाल का विरोध, नागरिक स्वतंत्रता, जनता पार्टी का गठन और गैर कांग्रेसी सत्ता द्वारा सरकार बनाकर भारतीय लोकतंत्र को मजबूत किया तथा एकल पार्टी के वर्चस्व को समाप्त किया। जे0पी0 नारायण विकेन्द्रीकरण, सर्वोदय की अवधारणा और दलीय राजनीति से दूर रहकर समाज सुधार कार्यों में लगे रहे। जयप्रकाश के चिंतन में निरंतरता को उनके विचारों के पूर्वाग्रहमुक्त विश्लेषण के द्वारा ही समझा जा सकता। राजनीतिकए आर्थिकए सामाजिक व नैतिक प्रश्नों पर उन्होंने विद्यमान विकृतियों की सजग समीहैक्षा ही नहीं कीए अपितु आदर्श व्यवस्था का वैकल्पिक प्रतिमान भी प्रस्तुत किया। ऐसे समय में जब पूंजीवादी व साम्यवादी आर्थिक पद्धतियों की विफलता निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गई है तथा केंद्रीकृत राजनीतिक संस्थाएं मानव कल्याण के लक्ष्य की प्राप्ति में असमर्थ व समस्याग्रस्त प्रतीत हो रही है. लोकस्वराज की जयप्रकाश की धारणा एक विचारणीय विकल्प है। चिंतन के प्रत्येक स्तर में विद्यमान उनका मानववादी आग्रह उनके चिंतन के सार्वभौमिक महत्व को प्रतिस्थापित करता है। जेण्पीण् के विचारों का मूल्यांकन करते हुए प्रोफेसर विमल विमल प्रसाद ने उयन्हें भारतीय समाजवादी दर्शन के मानस पिता की संज्ञा दी है।

संदर्भ सूची:

1. जैन पुखराज- भारतीय राजनीतिक चिन्तन- 2025
2. फड़िया बी0एल0- भारतीय राजनीतिक चिन्तन-2025
3. गबा, ओमप्रकाश- राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा-2004
4. सिंह, योगेन्द पाल- भारतीय राजनीतिक चिन्तन-2024
5. चतुर्वेदी, प्रो0 मधुकर श्याम- प्रमुख भारतीय राजनीतिक विचारक-2005
6. जयप्रकाश नारायण, टू वार्ड्स टोटल रिवॉल्यूशन
7. जयप्रकाश नारायण, समाजवाद, सर्वोदय व लोकतंत्र
8. जयप्रकाश (संपादित) नारायण देसाई आदि
9. विमल प्रसाद, भूमिका - जयप्रकाश नारायण, समाजवाद, सर्वोदय व लोकतंत्र
10. जयप्रकाश नारायण, व्याहा सोशलिज्म
11. जयप्रकाश नारायण, लोक स्वराज
12. जयप्रकाश नारायण, भारतीय राजव्यवस्था की पुनः रचना: एक सुझाव